यूनियन बैंक
ऑफ इंडिया

खुशहाली

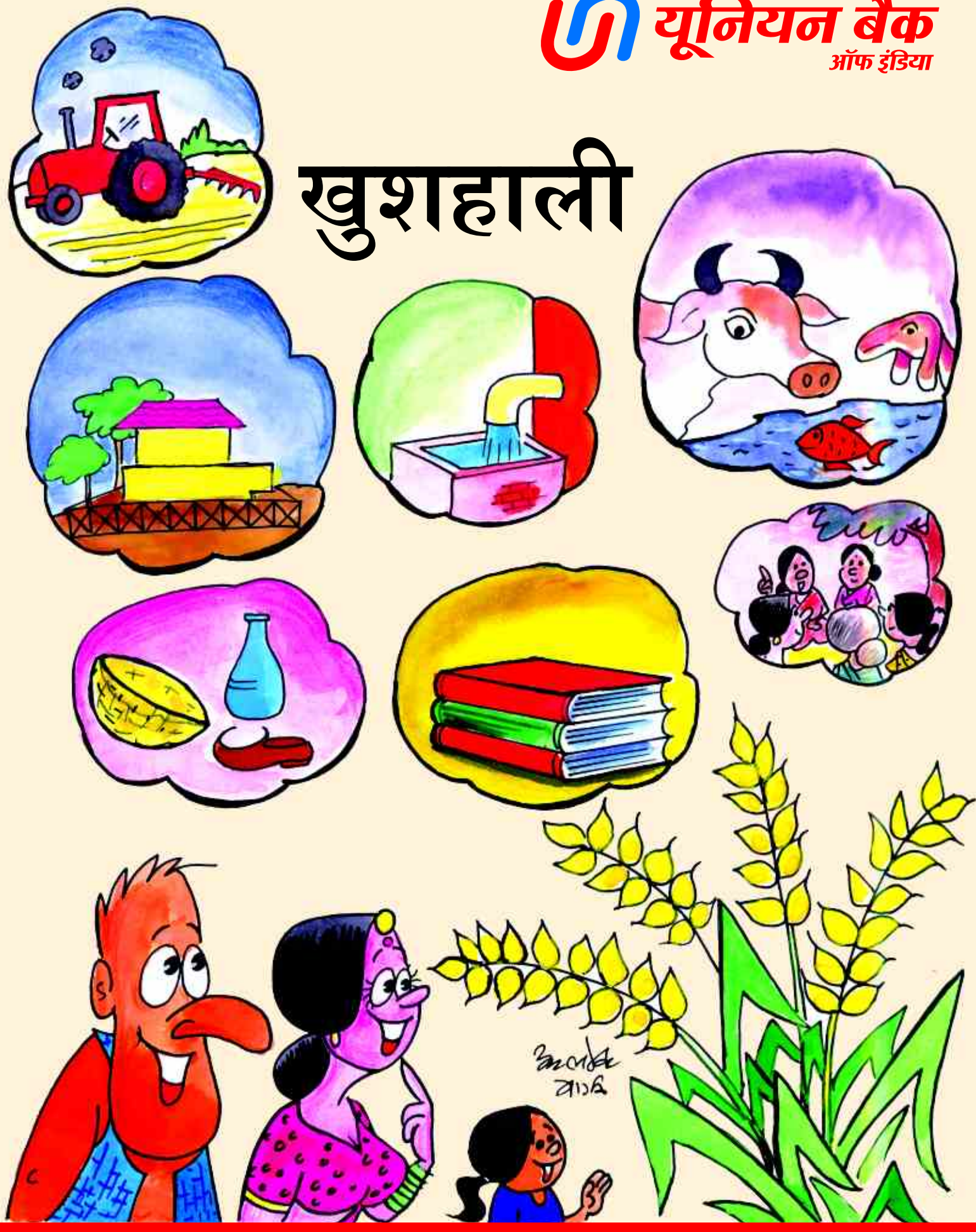

कहो हरिया, अगली फसल की तैयारी कैसी चल रही है.
काका, बीज खाद, दवा जो ख़रीदनी है. महाजन से कर्ज़ा ले कर आ रहा हूं.
500/-
महाजन से? तुमने तो बैंक में खाता भी खोला हुआ है. फिर बैंक से पैसा क्यों नहीं लिया?
काका, महाजन के यहां कोई झंझट नहीं. बस जमीन के कागज गिरवी रखे, अंगूठा लगाया और रुपये हाथ में.
हरिया की जमीन भी अपनी ही समझो
वाह! क्या बात है.
500/-

पर बैंक हमें आसान शर्तों व कम सूद पर कर्जा देता है. मात्र 7 फीसदी पर.
यहां भी लूट ! महाजन ने तो मात्र 3 टके पर दिया है.
?
तुम 3 और 7 ही देख रहे हो. यह नहीं जानते कि महाजन किस तरह सूदखोरी करता है. जानते नहीं तुम किस मुसीबत में फंसने जा रहे हो.
कैसी मुसीबत मैं तो मंडी जा रहा हूं. रामराम काका.

उस वर्ष बेमौसम बरसात और बीमारी ने सारी फसल बर्बाद कर दी
हरिया यह क्या हाल बना रखा है?
काका तुमने भी तो बैंक से पैसा लिया था. क्या बैंक वालों ने परेशान नहीं किया?
बिल्कुल नहीं.
कमाल है! महाजन धमकी पर धमकी दे रहा है. सूद नहीं चुकाया तो जानवर खोल लेगा.
अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा. बैंक चलते हैं. मैनेजर साहब कुछ न कुछ रास्ता जरूर निकालेंगे.
यूनियन बैंक
सच.

राम राम मैनेजर जी, यह हरिया है. बेचारा महाजन के चंगुल में फंसकर बहुत परेशान है.
देखो हरिया सबकी तरह तुमने भी यही गलती करी.
बैंक कर्ज के साथसाथ उचित सलाह भी देता है और सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ भी.
कृषि ऋण
देखो, बैंक ने काका को ऋण दिया तो फसल का बीमा भी करवा लिया. फसल खराब हुई तो बीमा कंपनी से वसूली कर उसके ऋण की भरपाई कर दी.
सच है.
अच्छा, मैं तो समझता था कि फसल बीमा पैसे की बर्बादी है.

पर आपका ब्याज तो बहुत ज्यादा है.
बैंक केवल 7% पर कर्ज देता है व समय से चुकाने पर 1% की छूट भी.
अर्थात बैंक का ब्याज केवल आधा टका महीना पड़ता है.
जबकि महाजन का 3% मासिक ब्याज वास्तव में 36% पड़ता है वह भी ब्याज पर ब्याज.
मूल से ज्यादा सूद!!
अरे बापरे! तभी उनके चंगुल में फंसकर न जाने कितने किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाते हैं.
अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा. तुम अभी भी बैंक की सहायता से साहूकार का कर्जा चुका सकते हो.
यहीं नहीं बैंक से एक लाख तक के फसली ऋण पर कुछ भी गिरवी नहीं रखना पड़ता.

हाय! मैं कितना बड़ा मूर्ख था. जो आपकी बात नहीं मानी.
संता को तो तुम जानते ही हो. बैंक से सहायता लेकर पशुपालन शुरु किया था. आज कहां से कहां पहुंच गया है.
संता डेयरी
आज मेरा दूध शहर शहर में बिकता है.
वाह!
देखो, यह कल्लू है. पहले गांवगांव घूमकर लोगों के जूते गांठता था. आज अपनी दुकान है.
राम राम.
कुट्टी ने ट्यूबवेल के लिए ऋण लिया था. आज उसके खेतों में सोना बरस रहा है.
साधु ने शिक्षा ऋण लेकर बेटे को पढ़ाया. आज वह राजधानी में अच्छी नौकरी कर रहा है.
होहो साधु चाचा इसबार भी बेटे ने आपके खाते में ढेर सारे पैसे भेजे हैं.

देख रहे हो, वह ग्राम विकास केंद्र है जहां मुझे जब भी जरूरत होती है सलाह मशवरे के लिए चला जाता हूं.
ग्राम विकास केंद्र

आज बैंक के रियायती दरों के ऋण और ग्राम विकास केंद्र की उपयोगी सलाह से कितने ही ग्रामवासी खुशहाली का जीवन जी रहे हैं.

अपना लाखा तो भूमिहीन किसान है फिर भी बैंक की सहायता से उसने अच्छी फसल काटी है.

अच्छा तो बैंक भूमिहीनों को भी कर्जा देता है. यह तो बड़ी कल्याणकारी योजना है
हां, क्यों नहीं.

हम कृषि ऋण के साथसाथ मछलीपालन, पशुपालन, रेशम के कीड़े पालने से लेकर इंदिरा आवास योजना के तहत मकान बनाने के लिए भी ऋण देते हैं.
वाह! मैनेजर साहब आपने तो मेरे सारे कष्ट दूर कर दिए.
तीन वर्ष बाद
अरे! हरिया, लगता है तुम कुछ ज्यादा ही खुशहाल लेगए हो
आओआओ काका
काका, सब यूनियन बैंक की कृपा है. खूब फसल हुई और अच्छी आमदनी भी. यहां तक कि महाजन से जेवर भी छुड़ा लिए.
यूनियन बैंक

यही नहीं, बचत से बहन की शादी की तैयारी भी शुरू कर दी.
अब तो मैं बीज, खाद, दवाई सब किसान क्रेडिट कार्ड से ही खरीदता हूं. अपनी पसंद की दुकान से देखभाल कर चीज खरीदता हूं. नकद भुगतान के लाभ के साथसाथ सामान भी हाथोंहाथ मिलता है.
कृषि भण्डार
वाह! किसान क्रेडिट कार्ड अर्थात् सर्वोत्तम सौदा.
पर एक बात भूल गए.
वह क्या?
बैंक का कर्ज चुकाना.
चुका देंगे. हम कहां भागे जा रहे हैं.

नहीं, यह गलत है. बैंक ने समय पर सहायता करी. अब समय पर कर्ज चुकाना हमारा फर्ज है.

यही नहीं, तुम्हारी साख बढ़ जाने से और अधिक रकम का कर्ज मिल सकता है और वह भी आसानी से.

अच्छा!

आपने तो मेरी आंखें खोल दीं भला कर्ज न चुकाने वाले को दोबारा पैसा कौन देगा. और फिर घूमफिर कर महाजन के शिकंजे में फंस कर अपना सबकुछ गंवा बैठेगा.

अब ब्याज ज्यादा लगेगा.

बैंक का पैसा हमारे जैसों की बचत का पैसा होता है. चुकाए गए कर्जे के पैसे से बैंक हमारे जैसे किसी और जरूरतमंद की सहायता कर सकेगा.

धन्यवाद अब मुझे भी यूनियन बैंक से कर्जा मिल गया है.

धन्यवाद दो, काका को.

आलोक भार्गव द्वारा रेखांकित व यूनियन बैंक ऑफ इंडिया कें. का. मुंबई के वित्तीय समावेशन विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग के समन्वयन से प्रकाशित.